“उत्तर भारतीय समान स्वर वाले कतिपय चयनित रागों का तुलनात्मक अध्ययन“

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
आगरा की पी–एच. डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध–निर्देशकः
प्रो. रवि कुमार भटनागर
संगीत–गायन

शोधार्थीः
दया शंकर
संगीत–गायन

विभागाध्यक्षः
प्रो० (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी
संगीत–विभाग

कला–संकाय प्रमुखः
प्रो० जे०के० वर्मा

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा

भूमिका

विश्व में जितनी भी संगीत–प्रणालियाँ हैं, उनमें भारतीय संगीत का स्थान सर्वोपरि है। भारतीय संगीत की चर्चा होते ही मस्तिष्क में सर्वप्रथम 'राग' शब्द का स्मरण आता है। यद्यपि संगीत की सभी प्रणालियों में स्वर तथा ताल किसी न किसी रूप में विद्यमान है, लेकिन राग की अवधारणा भारतीय संगीत की अपनी एक विशेषता है।

प्राचीनकाल से वर्तमान तक हमारे संगीत में अनेक परिवर्तन हुए हैं, परन्तु आधारभूत स्थान राग का ही है। इसी कारण शास्त्रीय संगीत को स्थिर रूप प्राप्त है। भारतीय संगीत में 'राग' कलाकार की कला तथा भावों की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने का ऐसा माध्यम है, जिसमें भाषा, भाव, स्वर, लय, कल्पना तथा उसकी कुशलता, इन सभी का सम्मिश्रित व व्यवस्थित रूप दृष्टिगत होता है।

भारतीय संगीत में राग का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत व सम्पन्न है। यद्यपि राग की चर्चा प्राचीन काल से नहीं मिलती, किन्तु इसका किसी न किसी रूप में अस्तित्त्व अवश्य रहा है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में अब तक अनेक रागों का निर्माण हो चुका है तथा अनवरत् चलता आ रहा है। इन रागों में समयानुसार परिवर्तन भी होता रहा है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह विशेषता है कि एक छोटे से परिवर्तन से ही राग का स्वरूप बदल जाता है। ऐसे अनेक राग है जिनमें छोटे–छोटे परिवर्तन करके नये–नये रागों का निर्माण किया गया है, जैसे स्वरों को कोमल या तीव्र करके, किसी राग में अन्य रागों का मिश्रण करके, आरोह–अवरोह में स्वर वर्जित करके, चलन में परिवर्तन करके इत्यादि।

उत्तर भारतीय संगीत–पद्धति के रागों की श्रृंखला में अनेक राग ऐसे हैं जिनसे मिलते–जुलते स्वरूप के अन्य राग भी हैं। उनको समप्रकृतिक राग कहा जाता है। ऐसे

रागों में समता या विषमता प्रकट करने के लिए अनेक आवश्यक तत्त्व होते हैं जिनसे उनका विशिष्ट स्वरूप दृष्टिगत होता है।

जहाँ प्रश्न अलग–अलग स्वरों के प्रयोग का है, वहाँ तो रागों में परिवर्तन दृष्टिगत होना स्वाभाविक है, किन्तु जिन रागों के स्वर एकदम समान होते हैं, उन रागों के गायन–वादन में कलाकार का कौशल ही राग के उचित स्वरूप का निर्माण कर सकता है। ऐसे राग अपनी निजी विशेषताओं के कारण ही एक दूसरे से अलग होते हैं। शास्त्रीय संगीत में ऐसे अनेक राग हैं जो स्वर की दृष्टि से समान हैं किन्तु स्वर–प्रयोग, न्यास, चलन, रस, भाव इत्यादि के आधार पर वे अपना स्वतन्त्र अस्तित्त्व बना लेते हैं, जैसे – मेघ–मल्हार व मध्यमाद सारंग। ये दोनों राग स्वर की दृष्टि से समान हैं किन्तु इनका चलन, प्रकृति व स्वर–लगाव नितान्त भिन्न है।

वर्तमान में लगभग सभी रागों का शास्त्रीय विवरण आज विभिन्न पुस्तकों व ग्रन्थों में उपलब्ध है। चूँकि प्रत्येक घराने की अपनी–अपनी अलग विशेषताएँ होती है, इस कारण कुछ रागों का स्वरूप एवं चलन अन्य घरानों से अलग हो जाता है। अतः सभी विद्वानों द्वारा दिया गया रागों का विवरण प्रायः उनकी अपनी परम्परा के अनुसार मिलता है। अलग–अलग पुस्तकों में अलग–अलग विवरण मिलने के कारण विद्यार्थियों की रागों के स्वरूप को समझने में भ्रम की स्थिति बनी रहती है, जो कि समान स्वर वाले रागों में और अधिक हो जाती है।

शोधकर्त्ता ने स्वयं अपने संगीत के अध्ययन काल में समान स्वर वाले रागों के तुलनात्मक विवरण में ऐसी ही समस्याओं का अनुभव किया। शोधकर्त्ता का मानना है कि यदि इस विषय पर शोधकार्य किया जाए तो सभी स्तर की कक्षाओं के विद्यार्थियों को

समान स्वरों वाले रागों की काफ़ी अवधारणाएँ स्पष्ट हो जाएंगी तथा एक ही स्थान पर सम्बन्धित विषय–सामग्री भी उपलब्ध हो जायेगी, जो उनके लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगी।

शोधकर्त्ता की सदैव से ही संगीत के प्रयोगात्मक पक्ष में अधिक रुचि रही है, साथ ही प्रस्तुत विषय में भी जिज्ञासा रही है। इस विषय पर और अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण भी किया गया। इससे सम्बन्धित जो भी जानकारी प्राप्त हुई है, उसका विवरण इस प्रकार है :–

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :–

2000 औड़व–औड़व जाति के दस रागों का अध्ययन – रितु राज

निर्देशिका – डॉ0 पर्ली सेबेस्टियन (डी. ई. आई., दयालबाग़, आगरा)

2010 छायालग एवं संकीर्ण रागों का सौन्दर्यात्मक अध्ययन एवं विश्लेषण – आयुशी श्रीवास्तव

निर्देशक – प्रो0 रवि कुमार भटनागर (डी. ई. आई., दयालबाग़, आगरा)

2012 अप्रचलित सायं कालीन संधि प्रकाश रागों का अध्ययन – आकांक्षा जोशी

निर्देशक – डॉ0 गौतम तिवारी (डी. ई. आई., दयालबाग़, आगरा)

2012 औडव–सम्पूर्ण जाति के कतिपय प्रचलित एवं अप्रचलित सायंकालीन सन्धिप्रकाश रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन – रेनूबाला

निर्देशिका – प्रो0 सुधा सहगल (डी. ई. आई., दयालबाग़, आगरा)

2016 उत्तरी एवं दक्षिणी संगीत–पद्धति में प्रयुक्त समान स्वर वाले रागों का अध्ययन – सारिका

निर्देशिका – प्रो0 सरोज घोष (पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़)

उक्त सर्वेक्षण में स्पष्ट है कि अभी तक उत्तर भारत में प्रचलित समान स्वर वाले रागों का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है। प्रो0 सरोज घोष द्वारा निर्देशित किये जा रहे शोधकार्य मे उत्तरी एवं दक्षिणी दोनों संगीत–पद्धति के समान स्वर वाले रागों का ही अध्ययन किया जा रहा है जो कि शोधकर्त्ता द्वारा चयनित विषय से नितान्त भिन्न है। चूंकि शोधार्थी के संज्ञान में प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित कोई भी कार्य नहीं किया गया है अतः निम्न विषय का शोधकार्य हेतु चयन किया गया :–

विषय–कथन :– उत्तर भारत में प्रचलित समान स्वर वाले कतिपय चयनित रागों का अध्ययन।

विषय में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या :–

समान स्वर वाले राग – इसका तात्पर्य उन रागों से है जिनके स्वर तो समान हैं किन्तु स्वर–प्रयोग, चलन, वादी–सम्वादी, न्यास आदि जैसी विशेषताओं से वे परस्पर भिन्न हो जाते हैं। उदाहरण के लिएः भैरव और गौरी, दोनों ही रागों में समान स्वर प्रयोग किये जाते है, किन्तु वादी–संवादी, न्यास, चलन, प्रकृति, गायन–वादन समय आदि के द्वारा वे नितान्त भिन्न हो जाते हैं,।

1. **चयनित** – चयनित से तात्पर्य उन समान स्वरों वाले रागों से है जिन्हें शोधार्थी ने अपने शोधकार्य हेतु चुना है।

अध्ययन के उद्देश्य :– उत्तर भारतीय समान स्वर वाले कतिपय रागों का उनके विभिन्न तत्वों के आधार पर उनकी तुलना कर प्रकाश में लाना। मुख्य बिन्दु इस प्रकार रहेंगे :–

स्वर–प्रयोग–चयनित रागों में उनके विशिष्ट स्वर–प्रयोग (वादी–संवादी, अल्पत्व–बहुत्व, न्यास) आदि के आधार पर रागों की तुलना करना।

चलन–चयनित रागों की उनके विशेष चलन के आधार पर तुलना करना।

प्रकृति–चयनित रागों की उनकी प्रकृति के आधार पर तुलना करना (मींड़, गमक, आन्दोलन, गायन–वादन समय इत्यादि)

रस–भाव–चयनित रागों में प्रयुक्त विशिष्ट स्वर–संगतियों के द्वारा उत्पन्न होने वाले रस–भाव के आधार पर उनकी तुलना करना।

अन्य बिन्दु–

गायन–शैलियों के आधार पर–गायान की विभिन्न शैलियों, जैसे–ध्रुपद, धमार, ख्याल, आदि के आधार पर रागों के स्वरूप की तुलना करना।

ताल–लय–विभिन्न ताल–लय के आधार पर रागों एवं उनकी बन्दिशों का अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता :– उत्तर भारतीय संगीत में समान स्वरों वाले अनेक राग हैं जो निजी विशेषताओं से एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। ऐसे रागों का स्वरूप जब तक स्पष्ट न हो, उनका गायन–वादन दुष्कर है। समान स्वर होने के कारण विद्यार्थियों को उन रागों को समझना और उन्हें अलग–अलग करना सरल नहीं होता जिसके कारण संशय की स्थिति बनी रहती है। शोधकर्त्ता ने इस समस्या को समझते हुए ऐसे ही कुछ रागों को चुनकर उनका तुलनात्मक अध्ययन करना अपना उद्देश्य बनाया जिससे विद्यार्थी वर्ग को रागों के स्वरूप से सम्बन्धित सभी अवधारणाएँ स्पष्ट हो जायेंगी।

<u>अध्ययन के स्रोत</u> :–प्रस्तावित शोध विभिन्न पुस्तकालयों, सी.डी., डी.वी.डी., इन्टरनेट, पत्र–पत्रिकाओं, लेख–लेखन सामग्री, विभिन्न घरानेदार कलाकारों एवं विद्वानों से साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि के माध्यम से पूर्ण किया जायेगा।

<u>परिसीमांकन</u> :–समय व कार्य की सीमा को ध्यान में रखते हुए समान स्वर वाले चयनित रागों पर ही कार्य किया जायेगा, जो कि निम्नवत हैं:

1. **(शुद्ध स्वरों वाले राग)**–भूपाली–देशकार, कौशिक ध्वनि–भिन्नषड्ज।
2. **(कोमल स्वरों वाले राग)**–भैरव–कलिंगड़ा–गौरी, आसावरी–जौनपुरी, भैरवी–बिलासखानी तोड़ी, मेघमल्हार–मध्यमाद सारंग।
3. **(कोमल व तीव्र स्वरों वाले राग)**–(अ) (ऋषभ, धैवत कोमल मध्यम तीव्र स्वर वाले राग)–बंसत–पूर्वी–परज।

(ब) (ऋषव कोमल व मध्यम तीव्र स्वर वाले राग)– पूरिया–सोहनी–मारवा।

<u>अध्ययन की रूपरेखा</u> :– विभिन्न स्रोतों से प्राप्त समस्त विषय–सामग्री के आधार पर शोधकार्य को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त किया जायेगा :–

भूमिका।

<u>प्रथम अध्याय</u> :– सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण।

<u>द्वितीय अध्याय</u> :– भारतीय संगीत में राग गायन–वादन की परम्परा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में।

<u>तृतीय अध्याय</u> :– चयनित समान स्वर वाले रागों का तुलनात्मक अध्ययन। (शुद्ध स्वरों वाले राग)

<u>चतुर्थ अध्याय</u> :– चयनित समान स्वर वाले रागों का तुलनात्मक अध्ययन। (कोमल स्वरों वाले राग)

<u>पंचम अध्याय</u> :– चयनित समान स्वर वाले रागों का तुलनात्मक अध्ययन। (कोमल व तीव्र स्वरों वाले राग)

निष्कर्ष।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

1. हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास।

   डॉ0 सुनन्दा पाठक – प्रथम संस्करण –1989 राधा पब्लिकेशन

2. मतंग से पूर्व राग की अवधारणा एवं विकास।

   डॉ0 नमिता यादव – प्रथम संस्करण –2009 अनुभव पब्लिशिंग हाउस

3. प्रचलित समप्राकृतिक रागों का तुलनात्मक अध्ययन।

   डॉ0 शशि कालड़ा – प्रथम संस्करण – 2011 संजय प्रकाशन

****